शीत युद्ध

Q1. तनाव शैथिल्य क्या है?

Ans दो देशों के तनावपूर्ण संबंधों की समाप्ति को तनाव शैथिल्य कहा गया है। 1962 के क्यूबा संकट के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के व्यवहार में आए परिवर्तनों को तनाव शैथिल्य का नाम दिया गया। क्यूबा संकट के बाद शीतयुद्ध के वातावरण में कुछ कमी आई और दोनों गुटों के उपजी तनाव की भावना सौहार्दपूर्ण व मित्रता की भावना में बदलने के आसार दिखाई देने लगे। तनाव शैथिल्य से शीतयुद्ध से उत्पन्न पुराने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का परिदृश्य बदलने लगा और विश्व में शांतिपूर्ण वातावरण का जन्म हुआ।

Q2. शीतयुद्ध के दौरान दोनों महाशक्तियों ने किन संगठनों को जन्म दिया।

Ans शीत युद्ध के दौरान सम्पूर्ण विश्व दो खेमों में बँट चुका था। अमेरिका व उसके पक्ष के देश पश्चिमी गठबंधन तथा सोवियत संघ व उसके सदस्य देश पूर्वी गठबंधन कहलाते थे। पश्चिमी गठबंधन ने अपने को गठबंधन का रूप प्रदान किया। 12 सदस्यीय उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो NATO) की स्थापना अप्रैल 1949 में हुई। इसके अनुसार यदि नाटो के किसी भी सदस्य देश पर हमला होता है तो इस संगठन में शामिल सभी सदस्य अपने ऊपर हमला मानेंगे व उस देश की मदद करेंगे।

Q3. भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति की आलोचना क्यों की गई?

Ans भारत द्वारा अपनाए गए गुटनिरपेक्षता के कारण इसकी दो आधारों पर आलोचना की गई है।

(1) भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति सिद्धांतविहीन है। नाम (NAM) को बनाए रखने के नाम पर अपने राष्ट्रीय हितों का प्रश्रय दिया। इसी कारण भारत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में महत्वपूर्ण समय पर भी दृढ़ निर्णय लेने से बचा।

(2) यह कहा गया कि भारत ने कई बार विरोधाभासी चरित्र अपनाया। यद्यपि भारत दूसरों की गुटों में सम्मिलित होने के लिए आलोचना करता था परन्तु 1971 ई० में इसने स्वयं सोवियत संघ से 20 वर्षीय मित्रता की संधि की। जिसका तात्पर्य था सभी घोषित गुट व्यवस्था में शामिल होना था। भारत सरकार के मतानुसार बांग्लादेश के संकट के समय भारत को सैनिक व कूटनीतिक सहायता की आवश्यकता थी। उसके अनुसार यह संधि भारत को किसी देश से संबंध बनाने से नहीं रोकती यहाँ तक की अमेरिका से भी।

Q(4) भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने के कोई चार कारण लिखिए।

Ans निम्न कारणों ने भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने को प्रेरित किया।

(i) भारत गुलामी से स्वतंत्र रहकर अपने देश का चतुर्मुखी विकास करना चाहता था।

(ii) भारत ने इन दोनों से जुड़ने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि यह जानता था कि संगठन का सदस्य बनने पर उन्हें संगठन के नियमों का पालन करना पड़ेगा।

(iii) संगठन से जुड़ने पर वह भी अस्त्र-शस्त्रों की होड़ में शामिल हो जाएगा। और विश्व शांति को खतरा पैदा हो जाएगा।

(iv) तटस्थ रहकर ही वह परतंत्र देशों की मदद कर सकता था।